गगास

द्विमासिक ई पत्रिका

अंक-03

फरवरी –मार्च 2025

डॉ0 प्रताप बिष्ट, राजकीय महाविद्यालय, भिकियासैंण (अल्मोड़ा)

“The World needs art now more than ever, as it has the power to heal and unite”

GIRISH KARNAD

सम्पादक मण्डल

सम्पादक– डॉ0 इला बिष्ट, असि0 प्रो0 समाजशास्त्र

सहसम्पादक– डॉ0 परितोष उप्रेती, असि0 प्रो0 भूगोल

छात्रा सम्पादक– रितु बिष्ट, बी0ए0 षष्ठम सेमेस्टर

छात्र सम्पादक– हिमांशु आर्या, बी0ए0 षष्ठम सेमेस्टर

तकनीकी सहयोग– श्री शेर सिंह, प्रयोगशाला सहायक, भौतिक विज्ञान

सलाहकार– 1– डॉ0 दीपा लोहनी, असि0 प्रो0 इतिहास
2– डॉ0 सुभाष चन्द्र आर्य, असि0 प्रो0 हिन्दी

संरक्षक एवं प्राचार्य

प्रो0 शर्मिला सक्सेना,
प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, भिकियासैंण (अल्मोड़ा)

विषयानुक्रमणिका

01- शुभकामना संदेश

02- सम्पादकीय

03- विद्यार्थियों की कलम से

04- आमन्त्रण

05- झरोखा

06- उपलब्धियां

07- अखबार से

08- मीमांसा

09- महाविद्यालय परिवार

10- इनफॉरमेशन डेस्क

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि डॉ पीएस राजकीय डिग्री कालेज भिकियासैंण जनपद अल्मोड़ा की द्विवार्षिक ई–पत्रिका गगास का तृतीय अंक प्रकाशन होने जा रहा है। पत्रिका विद्यार्थियों के बौद्धिक ज्ञान बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी। साथ ही मैं आशा करता हूँ कि छात्र–छात्रायें नशे से दूर रहकर अपनी सृजनात्मक सोच व रचनात्मक कार्यों के माध्यम से समाज को नयी दिशा देने के साथ भिकियासैंण क्षेत्र का नाम राज्य व देश विदेश में रोशन करेंगे।

मैं महाविद्यालय से प्रकाशित हो रही पत्रिका के सम्पादन के लिए बधाई देता हूँ तथा महाविद्यालय के उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

समस्त शुभकामनाओं सहित
दीपक बिष्ट,
अध्यक्ष,
नगर पंचायत भिकियासैंण।

प्रो.(डॉ.) एम.सी.पाण्डे
प्राचार्य

पी.एन.जी.राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रामनगर (नैनीताल), उत्तराखण्ड.

दिनांकः अप्रेल 10, 2025

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि राजकीय महाविद्यालय भिकियासैण द्वारा द्विमासिक ई–पत्रिका **गगास** का प्रकाशन किया जा रहा है। निश्चय ही यह पत्रिका महाविद्यालय की भौतिक प्रगति का महत्वपूर्ण अभिलेख होने के साथ ही छात्र–छात्राओं की अभिव्यक्ति के सशक्त मंच के रूप में भी प्रतिष्ठित होगी। इसमें प्रकाशित होने वाली सामग्री ज्ञानवर्द्धक, प्रेरणादायक तथा जनचेतना की उत्प्रेरक होगी जिससे महाविद्यालय के छात्र–छात्रा, प्राध्यापक व अन्य कार्मिकों तथा जनसामान्य को अपने महाविद्यालय पर गर्व करने का अवसर प्राप्त होगा। पर्वतीय अंचल की यह लघु ज्ञानधारा विशाल क्षेत्र का अभिसिंचन करने में सक्षम सिद्ध हो, यही कामना है।

अकादमिक सुवास है
प्रशासनिक प्रयास है
धीर पर्वत श्रंखला की
चंचला गगास है।
रामगंगा और गंगा का
करे पोषण सदा
एक लघुधारा को
अपने आप पर विश्वास है।

शुभकामनाओं सहित,

प्रो.(डॉ.) एम. सी. पाण्डे

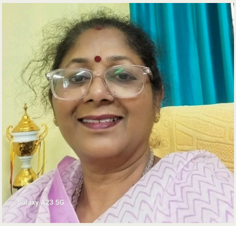

प्राचार्य का संदेश

प्रो० (डा०) शर्मिला सक्सेना

‘गगास’, हमारी महाविद्यालय की द्विमासिक ई-पत्रिका, का तृतीय अंक मेरे समक्ष है, और इसे देखकर मेरा हृदय असीम हर्ष और गर्व से परिपूर्ण हो उठा है। यह पत्रिका केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि हमारे विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता, रचनात्मकता, और अभिव्यक्ति की स्वतंत्र उड़ान का प्रतीक है।

यह अंक इस बात का साक्षी है कि हमारे विद्यार्थियों के नन्हे पंख अब न केवल उड़ान भर रहे हैं, बल्कि वे उत्तरोत्तर परिपक्वता के साथ विशाल आकाश की ओर अग्रसर हो रहे हैं। प्रत्येक लेख, कविता, कहानी, और चित्र में छिपी भावनाएँ, विचार, और नवीन दृष्टिकोण यह दर्शाते हैं कि हमारा विद्यालय न केवल शैक्षिक उत्कृष्टता की ओर अग्रसर है, बल्कि रचनात्मक और बौद्धिक विकास का एक सशक्त मंच भी प्रदान कर रहा है।

सम्पादक मंडल को उनकी लगन व श्रम के लिए धन्यवाद ।

‘गगास’ की निरंतरता, उन्नति, और समृद्धि के लिए अपनी अनंत शुभकामनाएँ व्यक्त करती हूँ। आप सभी का यह प्रयास निश्चय ही भविष्य में और अधिक प्रेरणादायक और प्रभावशाली परिणाम लाएगा।

सृजनशीलता और उत्कृष्टता की इस यात्रा में मेरी शुभकामनाएँ सदा आपके साथ हैं।

संपादक की कलम से

गगास द्वैमासिक पत्रिका का यह तृतीय अंक एक नई शुरुआत और विकास का प्रतीक है। राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण ने इस पत्रिका के माध्यम से जो अनोखा और महत्वपूर्ण कदम उठाया है, वह न केवल हमारे महाविद्यालय के लिए, बल्कि अन्य महाविद्यालयों के लिए भी एक प्रेरणा का स्रोत बन रहा है।

इस बार के अंक में हमें कई नई रचनाएँ मिली हैं, जिन्होंने न केवल हमारे महाविद्यालय, बल्कि अन्य कई महाविद्यालयों में भी नई ऊर्जा और उत्साह का संचार किया है। हमने इस अंक में विभिन्न गतिविधियों की उपलब्धियाँ दिखाई हैं, जो न केवल हमारे महाविद्यालय की सफलता को, बल्कि महाविद्यालय के बाहर भी की गई महत्वपूर्ण गतिविधियों और सफलताओं को उजागर करती हैं।

इस बार हमें कई नए और प्रेरणादायक रचनाएँ प्राप्त हुई हैं, जो हमारे छात्रों की मेहनत, समर्पण और रचनात्मकता का परिणाम हैं। हर एक रचना में छात्रों ने अपनी गहरी सोच और विचारशीलता को प्रस्तुत किया है, जिससे यह अंक और भी प्रभावशाली और प्रेरणादायक बन गया है।

यह पत्रिका महज एक शैक्षिक प्रयास नहीं, बल्कि छात्रों के विचार, दृष्टिकोण और रचनात्मकता का संगम है। इसमें न केवल हमारे महाविद्यालय की शैक्षिक उपलब्धियाँ हैं, बल्कि छात्रों ने समाज और संस्कृति से जुड़ी विभिन्न पहलुओं पर भी प्रकाश डाला है।

एक भूगोल के छात्र होने के नाते, मुझे यह बहुत अच्छा लगा कि इस पत्रिका का नाम एक नदी के नाम पर रखा गया है - गगास। गगास नदी न केवल हमारी धरती की प्रकृति का एक अभिन्न हिस्सा है, बल्कि यह हमें जीवन, शक्ति और निरंतरता का प्रतीक भी दिखाती है। इस पत्रिका का नाम गगास रखने से यह स्पष्ट है कि हम भी अपने विचारों और प्रयासों के माध्यम से ज्ञान की धारा को निरंतर प्रवाहित करना चाहते हैं।

हम सभी छात्रों और शिक्षकों का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने इस अंक को सफलता की नई ऊँचाई पर पहुँचाने में अपना योगदान दिया है। हमें विश्वास है कि गगास पत्रिका का यह तृतीय अंक हमारे महाविद्यालय के लिए एक मील का पत्थर साबित होगा और आने वाले अंकों में और भी उत्कृष्टता देखने को मिलेगी।

हम सभी छात्रों को इसके आगामी अंकों में भी सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करते हैं। धन्यवाद।

डा० परितोष उप्रेती
सह-संपादक, गगास

अकादमिक बैंक ऑफ़ क्रेडिट

अकादमिक क्रेडिट बैंक, जिसे संक्षेप में एबीसी कहा जाता है, एक आभासी तंत्र है जो भारत में उच्च शिक्षा संस्थानों के छात्रों द्वारा अर्जित क्रेडिट से निपटेगा और जिसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा मान्यता प्राप्त है।

यह एक क्रेडिट सुविधा है जिसकी कल्पना मूल रूप से भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन॰ई॰पी॰) 2020 में की थी, इस योजना में एक डिजिटल बुनियादी ढांचा बनाने का प्रावधान है जो देश के विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थानों के छात्रों द्वारा अर्जित शैक्षणिक क्रेडिट को संग्रहित करेगा।

एबीसी को छात्रों के व्यक्तिगत शैक्षणिक खाते खोलने, बंद करने और सत्यापित करने जैसी जिम्मेदारी सौंपी जाएगी। यह छात्रों को अपने शैक्षणिक क्रेडिट को इकट्ठा करने, क्रेडिट को संग्रहित करने, तथा क्रेडिट को स्थानांतरित करने तथा अपने हितधारकों के बीच आवश्यकतानुसार उन्हें बढ़ावा देने के लिए भी जिम्मेदार होगा।

छात्रों को एकेडमिक बैंक ऑफ़ इंडिया में मैन्यूअल रूप से खाता खोलना होगा और एबीसी द्वारा बनाई गई मानक संचालन प्रक्रियाओं का पालन करना होगा, साथ ही एक विशिष्ट आई॰डी॰ भी देनी होगी जो एबीसी के साथ छात्र के खाते की पहचान करेगी।

बैंक शैक्षणिक सत्र 2021-2022 में भाग लेने वाले 290 से अधिक शीर्ष भारतीय उच्च शिक्षा संस्थाओं के साथ काम करना शुरू कर देगा, इनमें वे सभी संस्थान शामिल होंगे जो राष्ट्रीय संस्थागत रैकिंग फ्रेमवर्क (छप्त्थ्) की शीर्ष 100 की सूची में है। जिन्हें राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (छ। ब्ब्) द्वारा “ग्रेड ।” मान्यता प्राप्त है।

अकादमिक बैंक ऑफ़ क्रेडिट की विशेषताए और कार्य-

इस योजना में उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा प्रस्तुत सभी प्रकार के पाठ्यक्रम शामिल होंगे। जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) से मान्यता प्राप्त है, चाहे वे स्नातक पाठ्यक्रम हों, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम हों, पीएचडी पाठ्यक्रम हों, डिप्लोमा पाठ्यक्रम हों, सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम हों, आदि।

इसमें किसी भी माध्यम से पेश किए जाने वाले पाठ्यक्रम शामिल हैं, चाहे वे नियमित कक्षा हो या मुक्त/ दूरस्थ शिक्षा या आ◌ॅनलाइन पाठ्यक्रम।

सामान्यतः छात्रों द्वारा अर्जित क्रेडिट की वैधता 7 वर्ष होगी जब तक कि उस विशेष पाठ्यक्रम के लिए अन्यथा निर्दिष्ट न किया गया हो। तथा वैधता अवधि समाप्त होने पर ये क्रेडिट समाप्त हो जाएँगे।

अकादमिक बैंक ऑफ़ क्रेडिट की विशेषताए और कार्य–

- इस योजना में उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा प्रस्तुत सभी प्रकार के पाठ्यक्रम शामिल होंगे। जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) से मान्यता प्राप्त है, चाहे वे स्नातक पाठ्यक्रम हों, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम हों, पीएचडी पाठ्यक्रम हों, डिप्लोमा पाठ्यक्रम हों, सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम हों, आादि।

- इसमें किसी भी माध्यम से पेश किए जाने वाले पाठ्यक्रम शामिल हैं, चाहे वे नियमित कक्षा हो या मुक्त/ दूरस्थ शिक्षा या आॅनलाइन पाठ्यक्रम।

- सामान्यतः छात्रों द्वारा अर्जित क्रेडिट की वैधता 7 वर्ष होगी जब तक कि उस विशेष पाठ्यक्रम के लिए अन्यथा निर्दिष्ट न किया गया हो। तथा वैधता अवधि समाप्त होने पर ये क्रेडिट समाप्त हो जाएँगे।

अकादमिक बैंक ऑफ़ क्रेडिट का महत्व–

- छात्रों के व्यक्तिगत खातों में संग्रहित क्रेडिट से उन्हें अपने शैक्षणिक/कैरियर विकल्पों के संदर्भ में अधिक स्वतंत्रता मिलेगी।

- यदि कोई विद्यार्थी किसी कारणवश पाठ्यक्रम/ संस्थान छोड़ने का निर्णय लेता है तो इसमें उच्च शिक्षा के लिए उसके द्वारा खर्च किया गया समय व्यर्थ नहीं जाएगा।

- यह योजना संस्थानों द्वारा पैसा कमाने के उद्देश्य से छात्रों को उनकी इच्छा के विरूद्ध अपने पाठ्यक्रम में नामांकन रखने के लिए अपनाई गई दबावपूर्ण प्रणाली को समाप्त कर देगी।

अदिति शर्मा
बी॰ए॰ द्वितीय सेमेस्टर

“बसंती देवी” (पद्मश्री सम्मानित)

परिचय-पद्मश्री से सम्मानित पर्यावरणविद् बसंती देवी का जन्म 1953 को उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ में हुआ था, उनके पिता का नाम वरदनाथ हलदंर था। बसंती देवी जो एक समाज सेविका थी इनके पिता ब्रिटिश सरकार के दौरान असम के एक बड़े जमींदार के दीवान थे।

उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ की रहने वाली बसंती देवी 14 साल की उम्र में विधवा हो गई थी, उसके बाद वह अपने पिता के साथ मिलकर समाज सेवा और महिलाओं के खिलाफ फैली कुरीतियों को दूर करने का काम कर रही है, इन्होंने अपने साथ कई महिलाओं का समूह बनाकर समाज और पर्यावरण, संस्कृति के प्रति अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। 2022 में बसंती देवी को देश के चौथे बड़े नागरिक सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया था इससे पहले भी इन्हें देश का सर्वोच्च नारी शक्ति पुरस्कार मिल चुका है।

12 वर्ष की उम्र में हो गई थी शादी- बसंती देवी की शादी 12 वर्ष की उम्र में हो गई थी इसके 2 साल बाद ही इनके पति की मृत्यु हो गई जिसके बाद इन्होंने दुबारा शादी न कर अपने मायके आकर पढ़ाई जारी की और महिलाओं व समाज के लिए एक रोशनी बनी।

पर्यावरण और नदी को बचाने के लिए बसंती देवी का संघर्ष- पर्यावरण और नदी को बचाने के लिए इन्होंने 2003 में महिलाओं का एक संगठन बनाया, जिसमें इन्होंने पर्यावरण व वनों के दोहन नदियों को सूखने से बचाने पर कार्य किया जो की काफी सराहानीय रहा।

बसंती देवी (कोसी नदी)- 12वी की पढ़ाई पूरी कर गाँधीवादी समाज सेवी राधा के संपर्क में आयी और फिर कौसानी के लक्ष्मी आश्रम में रहने लगी और कोसी नदी को सूखता देख उन्होंने इसे बचाने का संकल्प लिया। इन्होंने अपने कार्यों को पूरा करने में कभी हार नही मानी।

बसंती देवी ने कौसानी से लोद तक पूरी घाटी में करीब 200 महिलाओं का समूह बनाया और महिला को भी समाज में पुरूष के बराबरी स्थान दिलवाने का प्रयास किया । घरेलू हिंसा प्रताड़ना झेल रही महिलओं को मुक्त करने का काम शूरू किया। 2014 में उन्होंने 51 गॉवों की 150 महिलाओं को आत्म-निर्भर बनाने में मदद की।

बसंती देवी हमारे उत्तराखण्ड की एक ऐसी महिला है जिन्होंने पद्मश्री पुरस्कार जीतकर पूरे उत्तराखण्ड का नाम गर्व से ऊंचा किया है।

पूजा बिष्ट
बी०ए० षष्ठम सेमेस्टर

सत्य सात्विक संस्था
मेरा अनुभव

सत्य सात्विक संस्था की शुरूआत श्री लक्की असनौरा, सोनिया शर्मा, भावना रावत, पुष्पा आर्या आदि के सहयोग से भिकियासैंण में की गई। सत्य सात्विक एक ऐसी संस्था है, जिसको प्रकृति और मानव दोनों को ध्यान में रखकर बनाया गया है।

भारतीय समाज में गाय को गौ माता कहा जाता है। गौ पूजन का महत्व केवल धार्मिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से भी है। हमारे जीवन में गाय का आर्थिक दृष्टि से भी बहुत महत्व है। गाय के गोबर से बने अनेक उत्पाद है जो हमारे दैनिक जीवन में उपयोगी होने के साथ ही इकों फ्रेंडली भी है। आज भी गाँवों के लोग जीवन यापन के लिए गाय पर निर्भर हैं।

सत्य सात्विक संस्था एक ऐसी संस्था है जहॉ गाय के गोबर से कई उत्पाद बनाये जाते हैं। जिनमें लक्ष्मी-गणेश जी की मूर्ति, हिरण, गोबर से निर्मित धूप, साबुन इत्यादि वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। ये सभी उत्पाद मनुष्य और पर्यावरण दोंनो के लिए लाभदायक हैं। जिसमें किसी को किसी प्रकार का नुकसान नहीं है। साथ ही इस संस्था में स्थानीय लोगों को प्रशिक्षण देने का कार्य भी किया जाता है। इसमें विशेष रूप से महिलाओं और लड़कियों को रोजगार देने पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

उत्तराखण्ड की प्राचीन लोक कला ऐपण घर के आंगन, देहरी और दीवारों की शोभा बढ़ाने के साथ ही रोजगार का जरिया भी बन चुका है। जिसका प्रशिक्षण भी इस संस्था में दिया जाता है। यह संस्था महिलओं और लड़कियों के प्रशिक्षण पर अधिक ध्यान इसलिए दिया जाता है, क्योंकि गाँव की महिलाएं चूल्हे-चैके तक ही सीमित रहती है और स्वयं की प्रतिमा को प्रदर्शित नहीं कर पाती।

यह संस्था ऐसी सभी महिलाओं को अपनी प्रतिभा निखारने का अवसर प्रदान करती है यहॉ सिलाई-बुनाई का प्रशिक्षण भी दिया जाता है मेरे स्वयं के अनुभव से यह प्रशिक्षण काफी अच्छा रहा, क्योंकि इसमें किसी का कोई नुकसान नही हैं, चाहे वह पर्यावरण हो या मनुष्य। इसमें एक ही पदार्थ द्वारा कई चीजों का निर्माण किया गया, जो कि गाय का गोबर है।

लक्ष्मी (पूर्व छात्रा)
रा॰ महा॰ भिकियासैंण (अल्मोड़ा)

अनुशासन का महत्व

अनुशासन जीवन की सबसे महत्वपूर्ण नींव है, जो हमारे व्यक्तित्व, लक्ष्य और सफलता की दिशा में मार्गदर्शन करता है। यह हमारी सोच, आदतों और व्यवहार को नियंत्रित करने का एक तरीका है, जो हमें जिम्मेदार, आत्म-नियंत्रित और संगठित व्यक्ति बनने में मदद करता है।

अनुशासन केवल नियमों का पालन करने तक सीमित नहीं है, यह हमारे पूरे जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्व सर्वाधिक है। एक विद्यार्थी के लिए समय पर उठना, पढ़ाई में नियमितता रखना और अपनी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में लगाना, अनुशासन के ही उदाहरण हैं। यह हमें लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ते रहने की प्रेरणा देता है।

अनुशासन हमारे व्यक्तित्व को निखारता है और आत्मविश्वास को बढ़ाता है। जब हम अनुशासित होते हैं, तो हमारे जीवन में स्थिरता और संतल न आता है। यह हमारी सोच को स्पष्ट करता है और निर्णय लेने की क्षमता को सुधारता है। उदाहरण के तौर पर, अगर हम अपने दिन का समय-सारणी बनाकर उसका पालन करें , तो हम न केवल अपने कार्यों को समय पर पूरा कर पाएंगे, बल्कि अपने लक्ष्य के और करीब भी पहुँचेंगे।

समाज का निर्माण अनुशासन से ही होता है। परिवार, विद्यालय, कार्यस्थल और यहाँ तक कि राष्ट्र की प्रगति भी अनुशासन पर निर्भर करती है। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति अनुशासन का पालन करे, तो समाज में शांति, सहयोग और समृद्धि बनी रहती है।

अनुशासनहीनता जीवन में अव्यवस्था और असफलता लाती है। यदि हम अपने कार्यों में लापरवाही बरतते हैं, तो न केवल हमारे लक्ष्य दूर हो जाते हैं, बल्कि हमारे संबंध और प्रतिष्ठा भी प्रभावित होती है। इतिहास गवाह है कि अनुशासन के बिना कोई भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता।

अनुशासन अपनाने के लिए सबसे पहले अपने दिनचर्या को व्यवस्थित करना चाहिए। समय का प्रबंधन, सकारात्मक सोच और अपने कार्यों के प्रति समर्पण, अनुशासन को जीवन का हिस्सा बनाने के महत्वपूर्ण कदम हैं। शुरुआत छोटे-छोटे कामों से करें, जैसे सुबह जल्दी उठना, नियमित व्यायाम करना और अपने कार्यों को समय पर पूरा करना।

अनुशासन जीवन का मार्गदर्शक प्रकाश है, जो हमें कठिनाइयों के अंधकार में सही राह दिखाता है। यह केवल नियमों का पालन करने तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन के हर पहलू में सफलता और संतोष पाने का आधार है। अनुशासन को अपनाकर हम न केवल अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास में भी योगदान दे सकते हैं। अतः हमें अनुशासन को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना चाहिए।

"अनुशासन वह पुल है, जो सपनों और वास्तविकता के बीच का फासला तय करता है।"

डॉ० दयाकृष्ण
सहायक प्राध्यापक
जन्तु विज्ञान
राजकीय महाविद्यालय
भिकियासैंण (अल्मोड़ा)

बुद्धिमत्ता की जीत

एक राजा की बेटी की शादी होनी थी। बेटी की यह शर्त थी कि जो भी 20 तक की गिनती सुनाएगा, वही राजकुमारी का पति बनेगा। गिनती ऐसी होनी चाहिए जिसमें सारा संसार समा जाए। जो यह गिनती नहीं सुना सकेगा, उसे 20 कोड़े खाने पड़ेंगे। यह शर्त केवल राजाओं के लिए थी। अब एक तरफ राजकुमारी का वरण और दूसरी तरफ कोड़े! एक-एक करके राजा-महाराजा आए। राजा ने दावत का आयोजन भी किया। मिठाई और विभिन्न पकवान तैयार किए गए। पहले सभी दावत का आनंद लेते हैं, फिर सभा में राजकुमारी का स्वयंवर शुरू होता है।

एक से बढ़कर एक राजा महाराजा आते हैं। सभी गिनती सुनाते हैं, जो उन्होंने पढ़ी हुई थी, लेकिन कोई भी ऐसी गिनती सुना नहीं पाया जिससे राजकुमारी संतुष्ट हो सके। अब जो भी आता, कोड़े खाकर चला जाता। कुछ राजा तो आगे ही नहीं आए। उनका कहना था कि गिनती तो गिनती होती है, राजकुमारी पागल हो गई है। यह केवल हम सबको पिटवा कर मजे लूट रही है। यह सब नजारा देखकर एक हलवाई हंसने लगा। वह कहता है, "डूब मरो राजाओं" आप सबको 20 तक की गिनती नहीं आती।

यह सुनकर सभी राजा उसे दण्ड देने के लिए कहने लगे। राजा ने उससे पूछा, "क्या तुम गिनती जानते हो? यदि जानते हो तो सुनाओं।"

हलवाई कहता है, "हे राजन, यदि मैंने गिनती सुनाई तो क्या राजकुमारी मुझसे शादी करेगी? क्योंकि मैं आपके बराबर नहीं हूँ, और यह स्वयंवर भी केवल राजाओं के लिए है। तो गिनती सुनाने से मुझे क्या फायदा ?"

पास खड़ी राजकुमारी बोलती है, ठीक है, यदि तुम गिनती सुना सको तो मैं तुमसे शादी करूँगी। और यदि नहीं सुना सके तो तुम्हें मृत्युदण्ड दिया जाएगा।

सब देख रहे थे कि आज तो हलवाई की मौत तय है। हलवाई को गिनती बोलने के लिए कहा गया।

राजा की आज्ञा लेकर हलवाई ने गिनती शुरू की:
“एक भगवान, दो पक्ष, तीन लोक, चार युग, पाँच पाण्डव, छह शास्त्र, सात वार, आठ खण्ड, नौ ग्रह, दस दिशा, ग्यारह रूद्र, बारह महीने, तेरह रत्न, चैदह विद्या, पन्द्रह तिथि, सोलह श्राद्ध, सत्रह वनस्पति, अठारह पुराण, उन्नीसवीं तुम और बीसवां मैं...।

सब लोग हक्के-बक्के रह गए। राजकुमारी हलवाई से शादी कर लेती है। इस गिनती में संसार की सारी वस्तुएं मौजूद हैं। यहाँ शिक्षा से बड़ा तजुर्बा है।

बहुत ही सुन्दर और प्रेरणादायक कहानी है, जो बुद्धि, तजुर्बे और सरलता का महत्व दर्शाती है। यह हमें सिखाती है कि ज्ञान केवल किताबों से ही नहीं, बल्कि जीवन के अनुभवों और समझ से भी आता है। हलवाई की अनोखी गिनती ने यह साबित कर दिया कि सही दृष्टिकोण और आत्मविश्वास से बड़ी चुनौती को पार किया जा सकता है।

“एक भगवान से शुरू होकर बीसवां मैं” तक की गिनती वास्तव में संसार को समेटने वाली है।

महेश चन्द्र बलोदी
पुस्तकालय लिपिक
राजकीय महाविद्यालय
भिकियासैंण(अल्मोड़ा)

अतिथि की कलम से

देहदान

देहदान वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मृत्यु के बाद शरीर को जलाये जाने के अलावा किसी मेडिकल कॉलेज या संस्था को दान कर दिया जाता है। जहा शरीर का उपयोग मेडिकल के विद्यार्थीयों कि द्वारा शरीर विज्ञान को जानने अथवा अनुसंधान के लिए किया जाता है।

हमारे देश में देहदान का प्रतिशत अत्यन्त कम है जहा विकसित राष्ट्रों में प्रति दस लाख की आबादी पर 50 देहदान प्राप्त होते है वही हमारे देश में दस लाख की आबादी पर 1 देहदान भी प्रतिवर्ष प्राप्त नही होता है।

देहदान के लिए व्यक्ति को जीवित रहते हुए देहदान की लिखित घोषणा करनी होती है, मेडिकल कॉलेज में शरीर विज्ञान विभाग द्वारा घोषणा के आधार पर उसे पंजीकृत किया जाता है। पंजीकरण के उपरांत डोनर कार्ड भी जारी किया जाता है।

प्रत्येक संस्था इसके लिए एक प्रपत्र जारी करते है जिसमें घोषणा का प्रारूप दिया गया होता है, दो गवाहों के हस्ताक्षर होने आवश्यक है, जो व्यक्ति के करीबी, कानूनी उत्तराधिकारी होते है। मृत्यु पूर्व संस्थान द्वारा इनका पंजीकरण कर लिया जाता है। सम्बन्धित व्यक्ति की मृत्यु होने पर इन गवाहों के द्वारा ही शरीर दान के लिए सम्बन्धित संस्था को सूचित किया जाता है। अनेक परिस्थितियों मे। देहदान के साथ-साथ अंग दान के लिए भी घोषणा की गयी होती है, ऐसी परिस्थिति में अंगदान को प्राथमिकता दी जाती है बशर्ते संस्था के पास अंगदान करने के लिए लाइसेन्स हो और प्रत्यारोपण के लिए भी सुविधा उपल्बध हो।

मृत्यु होने के बाद 6 से 8 घन्टे के भीतर शरीर का संस्था में दान हो जाना चाहिए अन्यथा शरीर में सड़न की प्रक्रिया प्रारम्भ होने के बाद हो सकता है संस्था द्वारा दान प्राप्त करने के लिए माना कर दिया जाये। मृत्य शरीर को फ्रीजर बॉक्स में रखने से सड़न को रोका जा सकता है। शरीर को संस्था में पहुचाने का कार्य या तो परिवार के सदस्यों द्वारा किया जाता है या संस्था के द्वारा इसकी व्यवस्था की जाती है।

शरीर दान के साथ निम्न दस्तावेज भी जरूरी है-

- मृत्यु प्रमाण पत्र

- लिखित घोषणा/संकल्प पत्र विल फॉर्म की प्रति
- फोटोयुक्त पहचान पत्र की प्रति
- कानूनी उत्तराधिकारी की ओर से जारी सहमत पत्र

मृत्यु के बाद देहदान

निम्न परिस्थितियों में देहदान स्वीकार्य नही होता है:-

- एचआईवी, हेपेटाइटिस, गैंग्रीन, कोविड-19 पॉजिटिव, टयूबरक्लोसिस, जैसे गम्भीर रागों मे ग्रसित जिससे संक्रमण फैलने का अंदेशा हो।
- सड़क दुर्घटना में घायल होने से मृत्यु।
- अप्राकृतिक मृत्यु, मेडिको लीगल प्रकरण।
- सड़न युक्त डीकम्पोज्ड बॉडी।

देहदान के पश्चात संस्था द्वारा आमतौर पर शरीर को भविष्य के लिए प्रयोग के लिए अनेक रासयनों का प्रयोग कर सुरक्षित कर लिया जाता है। प्रयोग के उपरान्त वैज्ञानिक तरीके से इनका अंतिम निस्तारण भी किया जाता है। संस्था द्वारा व्यक्ति की गोपनीयता को बनाये रखा जाता है।

देहदान करना एक महान सामाजिक कार्य है यह अमूल्य समाज और देश सेवा, क्योकि नश्वर शरीर का उपयोग संस्था द्वारा छात्रों के ज्ञानवर्धन में होता है साथ ही अनेक प्रकार के अनुसंधान कार्य भी किए जाते है। पार्थिक शरीर को जलाने से होने वाले पर्यावरण नुकसान से भी बच सकते है। देहदान करने वाला व्यक्ति मृत्यु के बाद भी सम्मान पाता है।

क्या कहता है कानून-

किसी राष्ट्र के कानून के अन्तर्गत ही अंगो के दान परीक्षण, प्रसस्करण, भण्डारण, संवितरण और प्रत्यारोपण किया जा सकता है। गैर कानूनी तरीके से अथवा वाणिज्यिक लाभ प्राप्त करने के लिए किए गये कार्य अपराधिक एवं दंडनीय होते है। प्रत्यारोपण को कानूनी मान्यता दिये जाने के उद्देश्य से हर देश के अलग-अलग कानून बनाये गये है। जिनकों आॅर्गन ट्रांसप्लांटेशन एक्ट कहते है। प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य बन जाता है कि इस कार्य में कानून का समुचित पालन किया जाये।

भारत में अंगो और ऊतकों का प्रत्यारोपण अधिनियम 1994, 8 जुलाई 1994 को संसद द्वारा पारीत किया गया था जिसे राज्यों द्वारा संविधान के अनुच्छेद 252 खण्ड 1 के अन्तर्गत अंगीकृत किया गया है।

राज्य सरकारों द्वारा समुचित प्राधिकारीयों की नियुक्ति-

- समुचित प्राधिकारी मानव अंगो को निकाले जाने, परीक्षण प्रसंस्करण, भण्डारण प्रत्यारोपण के लिए पंजीकरण कराने का कार्य करती है, इसके लिए आमतौर पर रजिस्टर मेडिकल प्रैक्टिशनर/ चिकित्सा संस्थानों को निम्न प्रकार के लाइसेन्स प्रदान किये जाते है।
- दान में और ऑर्गन प्राप्त करने के लिए।
- रिट्रायबल ऑर्गन या ऊतक को भण्डारन अथवा सम-वितरण/ट्रांसपोटेशन करने के लिए
- ऑर्गन को दूसरे व्यक्ति में स्थापित या ट्रांसप्लांट करने के लिए।

इस अधिनियम की कुछ महत्वपूर्ण बातें इस तरह से है-

- अंगदाता की उम्र 18 वर्ष से अधिक हो।
- मृत व्यक्ति की उम्र 18 वर्ष से कम होने की स्थिति में मृत व्यक्ति के माता पिता में से कोई भी शरीर से कोई अंग निकाले जाने का प्राधिकार दे सकता है।
- मृत व्यक्ति के शरीर में मानव अंग मृत्यु के प्रमाणीकरण के उपरान्त ही निकाला जायेगा।
- ब्रेन डेड मामले में चिकित्सा विशेषज्ञ बोर्ड के द्वारा प्रमाणित करने के उपरान्त ही अंग निकाला जा सकेगा, ब्रेन डेड घोषित करने के लिए बोर्ड में न्यूरो फिजिशियन अथवा न्यूरो सर्जन का होना अनिवार्य होता है यदि चिकित्सालय में इनकी उपलब्धता न हो तो जनरल सर्जन, निश्चेतक या गहन चिकित्सा विज्ञानी को उनके स्थान पर नाामित किया जा सकता है। ऐसा चिकित्सा अधिकारी जो मृत्यु के समय व्यक्ति का उपचार कर रहा था उसे भी नामित किया जायेगा।
- किसी अंगदाता के शरीर में उसकी मृत्यु से पहले निकाला गया मानव अंग प्राप्तकर्ता के शरीर में तब तक प्रत्यारोपित नही किया जा सकता है। जब तक की प्राप्त करता कोई निकट नातेदार न हो।
- अंग प्रत्यारोपण से पूर्व प्राधिकार समिति का अनुमोदन लेना आवश्यक होगा।
- मानसिक रूग्णता से ग्रस्त व्यक्ति के शरीर से मानव अंग मृत्यु से पूर्व नही निकाले जा सकते।
- यदि किसी दाता द्वारा अपनी मृत्यु से पूर्व किसी भी समय लिखित रूप से, दो या अधिक सक्ष्यों की उपस्थिति में एक व्यक्ति निकट रिस्तेदार हो मृत्यु के पश्चात अपने शरीर के किसी मानव अंग को चिकित्सकीय प्रयोजनों के लिए निकाले जाने का प्राधिकार स्पष्ट रूप से किया हो तो दाता के शरीर को कब्जा लेना व्यक्ति, पंजीकृत

चिकित्सा व्यवसायी, चिकित्सालय / चिकित्सा संस्थान को मानव अंग निकाले जाने के लिए उचित सुविधाएं प्रदान करेगा।

समुचित प्राधिकारीयों की नियुक्ति प्रत्येक राज्य की सरकारों द्वारा की जाती है जो विभाग के सचिव स्तर के होते है। समुचित प्राधिकारी को सलाह देने के लिए सलाहकार समिति निम्न सदस्य होते है-

- प्रशासनिक विशेषज्ञ।
- दो चिकित्सा विशेषज्ञ।
- विज्ञान सामाजिक कार्यकर्ता।
- विधि विशेषज्ञ।
- गैर-सरकारी संगठन जो दान के क्षेत्र में कार्य कर रहे हो।
- अंग प्रत्यारोपण विशेषज्ञ।

स्वैच्छिक रूप से अंगदान के प्रति जागरूकता अनिवार्य है, इसके लिए प्रयास जरूर ही है। सद्भावपूर्वक, व्यापक जनहित के लिए कार्यों को इस अधिनियम में संरक्षण भी प्राप्त है। उनके विरूद्ध किसी तरीके का वाद अभियोजन या अन्य कार्यवाही नही किए जाने का प्रावधान है। वही बिना प्राधिकार मानव अंगो निकालने के लिए दण्ड का भी प्रावधान है। अंग को निकालने अथवा अंग निकालने वाले की सहायता करने पर 10 वर्ष तक का कारावास तथा 20 लाख तक का जुर्माना भी लगाया जाता है।

विशेष परिस्थितियों में दिल प्रत्यारोपण और फेफड़ा प्रत्यारोपण के लिए त्वरित गति से एक शहर से दूसरे शहर तक पहुचाने के लिए ग्रीन कॉरिडोर का निर्माण करने की अनुमति सलाहकार समिति देती है जिसके लिए अनेक विभागों को आपसी समन्जस्य की आवश्यकता है।

डॉ० एल०एम०उप्रेती
पूर्व निदेशक, चिकित्सा स्वास्थ्य उत्तराखण्ड
पूर्व पैथोलोजिस्ट एवं रक्त केन्द्र अधिकारी
(नैनीताल, अल्मोड़ा उधमसिंह नगर, बरेली,ललितपुर)

उपलब्धियाँ

माह- फरवरी 2025

दिनांक-04 फरवरी 2025

महाविद्यालय की ई-पत्रिका के प्रथम अंक का विमोचन किया गया।

सांस्कृतिक समिति के तत्वाधान में महाविद्यालय में आयोजित किये गए सांस्कृतिक कार्यक्रम

दिनांक-07 फरवरी 2025

सांस्कृतिक समिति के तत्वाधान में महाविद्यालय में लोकनृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया

दिनांक-08 फरवरी 2025

महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग द्वारा “आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास” विषय पर आयोजित किया गया वेबिनार

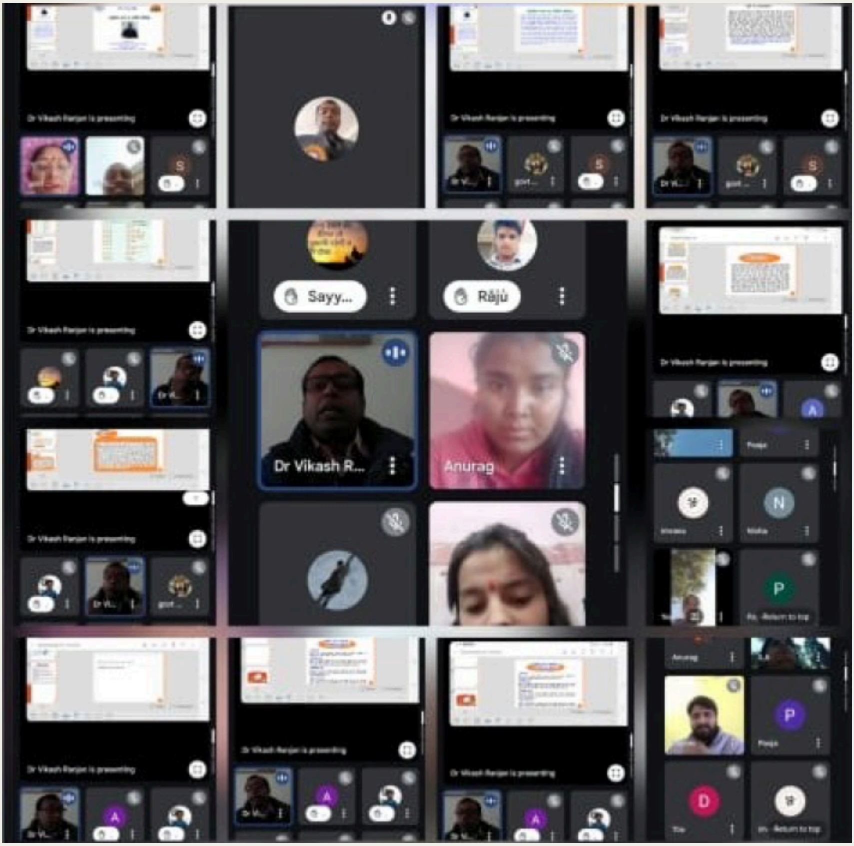

दिनांक-15 फरवरी 2025 से 27 फरवरी 2025

महाविद्यालय में उत्तराखण्ड सरकार के उच्च शिक्षा विभाग की देवभूमि उद्यमिता योजना के अंतर्गत 12 दिवसीय ईडीपी कार्यक्रम का आयोजन किया गया

दिनांक -17 फरवरी 2025

राजकीय महाविद्यालय कोटाबाग एवं राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण के मध्य विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों पर हुआ Memorandum of Understanding (MOU)

दिनांक -19 फरवरी 2025

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) के तत्वाधान में “लोक अदालत” विषय पर जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन।

दिनांक -20 फरवरी 2025

महाविद्यालय में वाणिज्य विभाग के तत्वाधान में मुख्यमंत्री की विभिन्न योजनाओं तथा डिजिटल मार्केटिंग में कैरियर के अवसर विषय पर प्रस्तुतिकरण प्रतियोगिता का किया गया आयोजन

दिनांक -21 फरवरी 2025

महाविद्यालय में शिक्षक -अविभावक संघ की बैठक का हुआ आयोजन।

महाविद्यालय में एकेडमिक बैंक ऑफ़ क्रेडिट्स आईडी प्रशिक्षण हेतु कार्यशाला का हुआ आयोजन

दिनांक -21 फरवरी से 22 फरवरी 2025

क्रीडा विभाग के तत्वाधान में दो दिवसीय खेल प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक -22 फरवरी 2025

महाविद्यालय में रोवर-रेंजर्स इकाई के तत्वाधान में विश्व चिन्तन दिवस मनाया गया

महाविद्यालय में पुरातन छात्र परिषद की बैठक का हुआ आयोजन

दिनांक -24 फरवरी 2025

राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण व भूगोल विभाग हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय पौड़ी केम्पस के संयुक्त तत्वाधान में “हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र एवं मानवीय प्रभाव” पर राष्ट्रीय वेबिनार का हुआ आयोजन

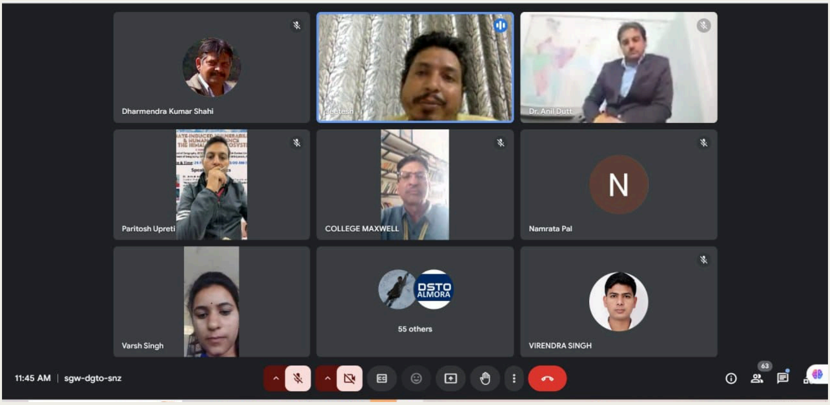

दिनांक -27 फरवरी 2025

महाविद्यालय में विज्ञान व इतिहास विभाग द्वारा अजीम प्रेम जी फाउंडेशन के सहयोग से राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के जीवन पर आधारित पोस्टर प्रदर्शनी का किया गया आयोजन

माह- मार्च 2025

दिनांक-07 मार्च 2025

महिला उत्पीड़न निवारण के समिति के तत्वाधान में मनाया गया 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस'

दिनांक-07 मार्च 2025

महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग के तत्वाधान में प्रध्यापकों के लिए समर्थ पोर्टल पर एक कार्यशाला का किया गया आयोजन

दिनांक-20 मार्च 2025

राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के तत्वाधान में स्वच्छता एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम का किया गया आयोजन

दिनांक- 22 मार्च 2025

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोंड़ा द्वारा गठित निरीक्षण मण्डल ने महाविद्यालय में कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय की अस्थायी सम्बद्धता विस्तारण हेतु किया निरीक्षण

दिनांक- 24 मार्च 2025

महाविद्यालय में समान नागरिक संहिता नियमावली उत्तराखण्ड 2025 पर जागरूकता कार्यक्रम का किया गया आयोजन

दिनांक- 26 मार्च 2025

महाविद्यालय के कैरियर काउंसिलिंग सैल के तत्वाधान में “कैरियर काउंसिंलिग का महत्व” विषय पर कार्यक्रम का किया गया आयोजन

सुर्ख़ियों में महाविद्यालय

उत्तराखण्ड / Leave a Comment

डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में लोकनृत्य प्रतियोगिता का हुआ आयोजन।

भिकियासैंण। डॉक्टर प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. शर्मिला सक्सेना के दिशा-निर्देशन में सांस्कृतिक समिति के तत्वावधान में लोकनृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिता महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ. दयाकृष्ण की अध्यक्षता में सांस्कृतिक समिति की सदस्य डॉ. दीपा लोहनी द्वारा आयोजित की गई। कार्यक्रम में छात्राओं ने लोकनृत्य की सुंदर प्रस्तुति देकर नृत्य के माध्यम से लोक संस्कृति को प्रस्तुत किया। एकल नृत्य में अपनी उम्दा प्रस्तुति के लिए सोनिया आर्या ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय व तृतीय स्थान पर क्रमशः तनु अधिकारी व बबीता रही।

इस अवसर पर झोड़ा गायन का आयोजन भी किया गया। प्रभारी प्राचार्य डॉ. दयाकृष्ण ने छात्राओं के शानदार प्रदर्शन की सराहना की। संचालन डॉ. दीपा लोहनी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में डॉ. विश्वनाथ पांडे, डॉ. कौशल अग्रवाल, डॉ. इला बिष्ट, डॉ.साबिर हुसैन, डॉ. सुभाष चंद्र, डॉ. राजीव कुमार, डॉ. परितोष उप्रेती सहित शिक्षणेत्तर कर्मचारी व छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

Contact us

दैनिक शुभारम्भ न्यूज़

HOME उत्तराखण्ड देश/ विदेश रोज़गार शिक्षा राजनीति स्वास्थ्य संस्कृति साहित्य अपराध Subscribe Sign In

उत्तराखण्ड / Leave a Comment

डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में सांस्कृतिक समिति के तत्वावधान में आयोजित हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम।

भिकियासैंण। डॉक्टर प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। सांस्कृतिक समिति के तत्वावधान में बसंत पंचमी के उपलक्ष्य में विभिन्न रंगारंग कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना के निर्देशन व अध्यक्षता में सांस्कृतिक समिति के संयोजक डॉ. कौशल अग्रवाल द्वारा संचालित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ छात्राओं ने सरस्वती वंदना गायन कर किया। तत्पश्चात छात्र-छात्राओं द्वारा द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम मे देशभक्ति गीत गायन, जागर गायन, गांधी जी के प्रिय भजन आदि की बेहद सुंदर प्रस्तुति दी, जिन्हें महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. शर्मिला सक्सेना सहित सभी ने खूब सराहा। सांस्कृतिक समिति के संयोजक डॉ. कौशल अग्रवाल ने छात्र-छात्राओं को बसंत पंचमी का महत्व बताते हुए सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर प्रतिभाग करने के लिए प्रेरित किया। उक्त कार्यक्रम में सांस्कृतिक समिति के सदस्य डॉ. इला बिष्ट, डॉ. दीपा लोहनी, डॉ. सुभाष चंद्र सहित डॉ. दयाकृष्ण, डॉ. साबिर हुसैन, डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. राजीव कुमार, डॉ. परितोष उप्रेती के साथ ही समस्त शिक्षणेत्तर कर्मचारी व छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

रिपोर्टर- एस. आर. चन्द्रा भिकियासैंण

1:14 ··· 82

ubharambhnews.com 12

दैनिक शुभारम्भ न्यूज़

HOME उत्तराखण्ड देश/ विदेश रोज़गार शिक्षा राजनीति स्वास्थ्य संस्कृति साहित्य अपराध Subscribe Sign In

उत्तराखण्ड / Leave a Comment

राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में ई-पत्रिका गगास का हुआ विमोचन।

भिकियासैंण। राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में पहली ई-पत्रिका गगास का विमोचन किया गया। महाविद्यालय की पहली ई-पत्रिका गगास के प्रथम अंक का विमोचन नगर पंचायत के सामाजिक कार्यकर्ता व पूर्व ग्राम प्रधान नंदन सिंह बिष्ट के द्वारा किया गया। महाविद्यालय की इस उपलब्धि पर समस्त महाविद्यालय परिवार को उनके द्वारा शुभकामनाएं दी गई व इस प्रयास की सराहना की गई। इस मौके पर महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना व महाविद्यालय के प्राध्यापक उपस्थित रहे।

रिपोर्टर- एस. आर. चन्द्रा भिकियासैंण

डिग्री कालेज में पढ़ने नहीं जा रहे छात्र

भिकियासैंण। डाक्टर प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में शिक्षक-अभिभावक संघ की एक बैठक हुई। बैठक में महाविद्यालय में छात्रों की कम उपस्थिति पर चिंता व्यक्त की गई। साथ ही इस विषय पर अभिभावकों से विचार-विमर्श कर छात्रों की उपस्थिति बढ़ाने हेतु प्रयास करने की अपील की गई। साथ ही महाविद्यालय में अनुशासन बनाए रखने, छात्र-छात्राओं को महाविद्यालय में पूर्ण गणवेश में उपस्थित होने, महाविद्यालय परिसर को नशा मुक्त बनाने आदि मुद्दों पर चर्चा गई। बैठक में 10 अभिभावकों ने प्रतिभाग किया। बैठक में अभिभावकों से अनुरोध किया गया कि वे प्रत्येक माह होने वाली पीटीए की बैठक में अवश्य प्रतिभाग करें। महाविद्यालय के अभिभावक- शिक्षक संघ नोडल डा. गौरव कुमार ने सभी का आभार व्यक्त किया। बैठक में महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डा. दयाकृष्ण व सभी प्राध्यापक, अभिभावक उपस्थित रहे।

दैनिक शुभारम्भ न्यूज़

HOME उत्तराखण्ड देश/ विदेश रोज़गार शिक्षा राजनीति स्वास्थ्य संस्कृति साहित्य अपराध Subscribe Sign In

उत्तराखण्ड / Leave a Comment

उच्च शिक्षा विभाग उत्तराखंड सरकार व भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान अहमदाबाद के संयुक्त तत्वावधान में राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में 12 दिवसीय उद्यमिता विकास योजना कार्यशाला का हुआ शुभारंभ।

भिकियासैंण। डॉक्टर प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में 12 दिवसीय "उद्यमिता विकास योजना कार्यक्रम" का शुभारम्भ हो गया है। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ. दयाकृष्ण, जिला समन्वयक सुमित मिश्रा व जिला मेंटर गिरधर बिष्ट व दीपक शर्मा ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ. दयाकृष्ण ने कार्यक्रम को छात्र-छात्राओं के लिए उपयोगी बताते हुए इसका लाभ उठाने के लिए कहा।

कार्यक्रम के जिला समन्वयक अधिकारी सुमित मिश्रा ने योजना की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए उद्यमिता विकास योजना पर विस्तार से प्रकाश डाला व स्थानीय उत्पाद, स्वरोजगार, स्टार्टअप, होमस्टे, फूड प्रोसेसिंग फंड, बाजार आदि के विषय में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम के जिला मेंटर गिरधर बिष्ट ने प्रतिभागियों को बताया कि स्थानीय स्तर की आवश्यकताओं के आधार पर उद्यम का चयन करें।

साथ ही उन्होंने एक स्टार्ट अप की शुरुआत करने की बारीकियों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ. राजीव कुमार ने अतिथियों का स्वागत कर अपने उद्बोधन में उद्यमिता योजना को युवाओं के लिए वरदान बताया तथा छात्र-छात्राओं को उद्यमिता का चयन करने को कहा गया। इस प्रकार की कार्यशाला प्रथम बार महाविद्यालय में आयोजित की जा रही है। कार्यक्रम का संचालन दीपक शर्मा ने किया। कार्यक्रम में नवीन सिंह, डॉ. अनु सिंह, मीना देवी, उपेंद्र सिंह आदि ने प्रतिभाग किया।

रिपोर्टर- एस. आर. चन्द्रा भिकियासैंण

विद्यार्थियों को सरकार की योजनाएं बताई

भिकियासैंण। डाक्टर प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में वाणिज्य विभाग के तत्वावधान में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसके अंतर्गत महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को मुख्यमंत्री की विभिन्न योजनाओं जैसे मुख्यमंत्री मेधावी छात्र पुरस्कार योजना, मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा प्रोत्साहन छात्रवृत्ति योजना आदि के बारे में जागरूक किया। साथ ही विभाग द्वारा डिजिटल मार्केटिंग में करियर के अवसर विषय पर प्रस्तुतिकरण प्रतियोगिता कराई गई। जिसमें हिमानी मनराल ने प्रथम स्थान, कविता जोशी ने द्वितीय व गोविंद रावत ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक मंडल की भूमिका में डॉ. इला बिष्ट, डॉ. दीपा लोहनी व डॉ. सुभाष चंद्र रहे।

कार्यक्रम महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ. दयाकृष्ण की अध्यक्षता में वाणिज्य विभाग के प्राध्यापक डॉ. गौरव कुमार व डॉ. राजीव कुमार ने संचालित किया। इस अवसर पर महाविद्यालय स्टॉफ एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

उत्तराखण्ड / Leave a Comment

राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में मनाया गया विश्व चिंतन दिवस।

भिकियासैंण। राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में रोवर रेंजर्स इकाई के तत्वाधान में विश्व चिंतन दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम के अवसर पर गायन प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता व भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। उक्त कार्यक्रम में रोवर रेंजर्स तथा विद्यार्थियों को बेडेन पावेल के आदर्शों का रोवर रेंजर्स के चरित्र निर्माण में योगदान पर रेंजर्स लीडर व रोवर्स लीडर द्वारा विस्तार से बताया गया।

गायन प्रतियोगिता में रेंजर्स विजय रहे। निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान दीपा नैनवाल बीए द्वितीय सेमेस्टर, द्वितीय स्थान खुशी शर्मा बीए चतुर्थ सेमेस्टर व तृतीय स्थान रश्मि भंडारी बीए द्वितीय सेमेस्टर ने प्राप्त किया। भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान दीपा नैनवाल बीए द्वितीय सेमेस्टर, द्वितीय स्थान मोहित धौलाखंडी बीए द्वितीय सेमेस्टर व तृतीय स्थान ज्योति बीए पंचम सेमेस्टर ने प्राप्त किया।

निर्णायक मंडल में डॉ. दीपा लोहनी, डॉ. परितोष उप्रेती व डॉ. गौरव कुमार रहे। उक्त कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभारी प्राचार्य डॉ. दयाकृष्ण की अध्यक्षता में की गई। कार्यक्रम का संचालन संयुक्त रुप से डॉ. इला बिष्ट रेंजर्स प्रभारी व डॉ. दिनेश कुमार रोवर्स प्रभारी द्वारा सयुंक्त रुप से किया गया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राध्यापक, विद्यार्थी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

रिपोर्टर- एस. आर. चन्द्रा भिकियासैंण

Contact us

उत्तराखण्ड / Leave a Comment

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय द्वारा गठित निरीक्षण मंडल ने राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में कला, वाणिज्य व विज्ञान संकाय की अस्थाई संबद्धता विस्तारण हेतु किया निरीक्षण।

भिकियासैंण। सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा द्वारा गठित निरीक्षण मंडल ने राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में निरीक्षण किया। निरीक्षण टीम ने सत्र 2025-26 के लिए कला, वाणिज्य व विज्ञान संकाय की अस्थाई संबद्धता विस्तारण हेतु निरीक्षण कर आवश्यक कार्यवाही की गई। निरीक्षण के दौरान टीम द्वारा शिक्षण कक्ष, पुस्तकालय, प्रशासनिक भवन, स्टॉफ रुम, प्रयोगशाला, स्मार्ट क्लास आदि का भौतिक निरीक्षण कर विभिन्न व्यवस्थाओं का जायजा लिया गया।

निरीक्षण मंडल की टीम में संयोजक के रुप में प्रो. जगत सिंह बिष्ट, कला विषय विशेषज्ञ के रुप में प्रो. एस. ए. हामिद, विज्ञान विषय विशेषज्ञ के रुप में प्रो. पी. एस. बिष्ट, वाणिज्य विषय विशेषज्ञ के रुप में प्रो. एम. एम. जिन्नाह व राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मानिला के प्राचार्य डॉ. गिरजा शंकर यादव उपस्थित रहे।

इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना, डॉ. विश्वनाथ पांडे, डॉ. कौशल अग्रवाल, डॉ. गौरव कुमार, डॉ. दयाकृष्ण, डॉ. इला बिष्ट, डॉ. दीपा लोहनी, डॉ. साबिर हुसैन, डॉ. सुभाष चंद्र, डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. राजीव कुमार, डॉ. परितोष उप्रेती, विरेंद्र राम, शेर सिंह, महेश चंद्र, गौरव कुमार, प्रदीप कुमार, श्याम सुंदर, पूरन सिंह जलाल, सतीश कुमार मौजूद रहे।

रिपोर्टर- एस. आर. चन्द्रा भिकियासैंण

दैनिक शुभारम्भ न्यूज़ सच की हर खबर
HOME उत्तराखण्ड देश/ विदेश रोज़गार शिक्षा राजनीति स्वास्थ्य संस्कृति साहित्य अपराध
Subscribe Sign In

उत्तराखण्ड / Leave a Comment

डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स आईडी प्रशिक्षण हेतु कार्यशाला का हुआ आयोजन।

भिकियासैंण। डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में महाविद्यालय के परीक्षा विभाग व रसायन विज्ञान विभाग के तत्वावधान में एबीसी आईडी प्रशिक्षण हेतु एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। परीक्षा प्रभारी व रसायन विज्ञान प्रभारी डॉ. साबिर हुसैन ने छात्र-छात्राओं को एबीसी आईडी के विषय में जानकारी देते हुए कहा कि नई शिक्षा नीति 2020 के तहत एबीसी आईडी स्कीम की शुरुआत 29 जुलाई 2021 को माननीय प्रधानमंत्री द्वारा की गई। उन्होंने एबीसी आईडी का विस्तृत रुप "एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट" को बैंक के साथ संबंधित करते हुए बताया कि जिस प्रकार हम अपनी पूंजी बैंक में जमा करते है व आवश्यकता पड़ने पर निकाल सकते है और वहां हमारी पूंजी सुरक्षित है। उसी प्रकार एबीसी आईडी एक ऐसा वर्चुअल स्टोर है, जिसमें हमारे क्रेडिट एकत्रित रहते है जो आवश्यकता पड़ने पर छात्रों को सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, डिग्री प्राप्त करने में मदद करते है।

इस योजना के तहत छात्र एक साथ अलग-अलग विषयों की पढ़ाई अलग-अलग संस्थानों में एक साथ कर सकते है। उन्होंने छात्रों को एबीसी की आधिकारिक वेबसाइट www.abc.gov.in के विषय में बताते हुए चरणबद्ध तरीके से अकाउंट बनाने के विषय में भी बताया। उक्त आईडी के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि इस योजना का मुख्य उद्देश्य छात्रों की शैक्षिक यात्रा को अधिक लचीला और समायोजनकारी बनाना है। इस दौरान छात्रों की एबीसी आईडी भी बनाई गई, साथ ही प्रभारी द्वारा यह भी बताया गया कि सोबन सिंह जीना यूनिवर्सिटी के परिणाम वहीं छात्र देख पाएंगे जिनकी एबीसी आईडी बनी होगी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रभारी प्राचार्य डॉ. दयाकृष्ण ने छात्रों को "अपार आईडी" के बारे में विस्तृत जानकारी दी। छात्रों ने ध्यानपूर्वक समझने और सीखने का प्रयास किया। इस मौके पर वाणिज्य विभाग के प्राध्यापक डॉ. गौरव कुमार व डॉ. राजीव कुमार, इतिहास विभाग की प्राध्यापक डॉ. दीपा लोहनी, भूगोल विभाग के प्राध्यापक डॉ. परितोष उप्रेती एवं अन्य स्टॉफ उपस्थित रहे।

रिपोर्टर- एस. आर. चन्द्रा भिकियासैंण

राज्य के लोगों को एक सूत्र में बांधेगा यूसीसी

संस, जागरण • भिकियासैंण : डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में छात्र छात्राओं को समान नागरिक संहिता नियमावली के बारे में बताया गया। मौके पर उनके सवालों का जवाब देते हुए यूसीसी को प्रदेश को एक सूत्र में बांधने वाला बताया।

सोमवार को राजकीय महाविद्यालय में समान नागरिक संहिता नियमावली उत्तराखंड 2025 जागरूकता कार्यक्रम में यूसीसी के नोडल डा. विश्वनाथ पांडे इसके प्रविधानों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि प्रदेश के प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारों को संरक्षित करते हुए इसमें कानून बनाए गए हैं। मुख्य वक्ता हेमा पांडे ने यूसीसी नियमावली पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि समान नागरिक संहिता पूरे देश के लिए एक नजीर है। जल्द ही अन्य राज्य भी उत्तराखंड की भांति यूसीसी बनाने पर कार्य करने लगे हैं। रसायन विज्ञान विभाग प्रभारी डा. साबिर हुसैन ने यूसीसी के मुख्य प्रविधानों पर चर्चा की। प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना ने महाविद्यालय स्टॉफ व छात्र-छात्राओं को यूसीसी रजिस्ट्रेशन के विषय में जानकारी दी। यूसीसी नोडल अधिकारी डा. विश्वनाथ पांडे ने मौके पर छात्र-छात्राओं के सवालों के जवाब देकर उनकी शंकाएं दूर कीं। इस अवसर पर डा. दीपा लोहनी, डा. दिनेश कुमार, डा. गौरव कुमार, डा. राजीव कुमार आदि मौजूद रहे।

आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास विषय पर दी जानकारी

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना के निर्देशन में अर्थशास्त्र विभाग एवं वाणिज्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। ऑनलाइन वेबिनार का शुभारंभ महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना ने किया। अर्थशास्त्र विभाग के प्राध्यापक डा. विश्वनाथ पांडे ने स्वागत भाषण के साथ कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर असिस्टेंट प्रोफसर डा. विकास रंजन उपस्थित रहे। इस दौरान वेबिनार संयोजक महाविद्यालय स्टॉफ और छात्र-छात्राओं ने ऑनलाइन माध्यम से वेबिनार में प्रतिभाग किया। इस दौरान वेबिनार संयोजक डा. विश्वनाथ पांडे अर्थशास्त्र विभाग, डा. गौरव कुमार वाणिज्य विभाग, डा. राजीव कुमार वाणिज्य विभाग सहित समस्त महाविद्यालय स्टॉफ एवं छात्र-छात्राओं ने ऑनलाइन माध्यम से वेबिनार में प्रतिभाग किया।

उत्तराखण्ड / Leave a Comment

हिमालय की बढ़ती संवेदनशीलता पर राष्ट्रीय वेबिनार हुआ आयोजित।

भिकियासैंण/पौड़ी गढ़वाल। डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय डिग्री कॉलेज भिकियासैंण व भूगोल विभाग हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय पौड़ी कैंपस के संयुक्त तत्वावधान में "हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र में जलवायु जनित संवेदनशीलता और मानव अनुकूलन क्षमता सामाजिक-पर्यावरणीय प्रभाव और अनुकूलन रणनीतियाँ" विषय पर एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया।

वेबिनार की संरक्षक प्रो. शर्मिला सक्सेना व प्राचार्य डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय डिग्री कॉलेज भिकियासैंण ने अतिथियों का स्वागत किया और वेबिनार की विषयवस्तु की प्रासंगिकता और उच्च गुणवत्ता की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के अकादमिक विमर्श से हिमालयी क्षेत्र की समस्याओं को समझने और उनके समाधान हेतु प्रभावी नीतियाँ विकसित करने में सहायता मिलेगी।

वेबिनार की अध्यक्षता प्रो. डी. के. शाही प्रोफेसर डीएवी कॉलेज देहरादून ने की व संयोजक डॉ. अनिल दत्त एचएनबीजीयू पौड़ी कैंपस ने की। आयोजन सचिव डॉ. परितोष उप्रेती भूगोल विभाग भिकियासैंण कॉलेज ने वेबिनार के सफल संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डॉ. जीतेश जोशी सहायक प्रोफेसर इतिहास विभाग, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी ने ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों पर विस्तृत चर्चा करते हुए बताया कि आज भी हिमालयी क्षेत्र में सरकार द्वारा ब्रिटिश काल की कई नीतियों को अपनाया जा रहा है, जिससे क्षेत्र की पारिस्थितिकी और समुदायों की संवेदनशीलता बढ़ रही है। उन्होंने जंगलों के दोहन, संसाधनों के अंधाधुंध उपयोग और संरचनात्मक विकास नीतियों की आलोचना करते हुए कहा कि यदि पारिस्थितिकी की अनदेखी जारी रही तो भविष्य में हिमालयी क्षेत्र और अधिक अस्थिर हो सकता है।

डॉ. पूरन जोशी सहायक प्रोफेसर भूगोल विभाग एसएसजेजेयू अल्मोड़ा ने अल्मोड़ा जिले के ग्रामीणों की जलवायु परिवर्तन के प्रति जागरुकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि स्थानीय समुदाय बाहरी दुनिया से अधिक जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को महसूस कर रहे है और अपनी परंपरागत तकनीकों को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़कर सतत जीवनशैली और अनुकूलन तकनीकों को अपना रहे हैं। ग्रामीणों द्वारा जल-संरक्षण, मिश्रित खेती, और पर्यावरण-अनुकूल निर्माण पद्धतियों का उपयोग कर स्थानीय स्तर पर जलवायु संकट से निपटने के प्रयासों की भी सराहना की गई।

डॉ. रविंदर सिंह बोरा (कंसल्टेंट) राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान NIDM ने अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय नीतियों पर प्रकाश डालते हुए यह विश्लेषण किया कि भारत सामुदायिक सशक्तिकरण के माध्यम से जलवायु अनुकूलन में कहां खड़ा है। उन्होंने विशेष रुप से उत्तराखंड में अपनाई जा रही जलवायु-लचीली तकनीकों और नीतियों पर चर्चा की और बताया कि हालांकि नीति स्तर पर कई योजनाएँ मौजूद हैं, लेकिन उनका प्रभावी क्रियान्वयन अभी भी एक बड़ी चुनौती बना हुआ है।

वेबिनार के सफल संचालन में आयोजन सचिव डॉ. परितोष उप्रेती की महत्वपूर्ण भूमिका रही, जिन्होंने कार्यक्रम को प्रभावी ढंग से संचालित किया और वक्ताओं तथा प्रतिभागियों के बीच विचार-विमर्श को सुचारु रुप से सुनिश्चित किया। अंत में, संयोजक डॉ. अनिल दत्त ने सभी वक्ताओं, प्रतिभागियों एवं आयोजन समिति का आभार व्यक्त करते हुए हिमालयी क्षेत्र के सतत विकास एवं संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया। वेबिनार शोधार्थियों, शिक्षकों और नीति-निर्माताओं के लिए एक उपयोगी मंच साबित हुआ, जिसमें हिमालय की संवेदनशीलता और उसके संरक्षण के उपायों पर विस्तृत चर्चा हुई।

Contact us

महात्मा की जीवन यात्रा आज भी लोगों को कर रही प्रेरित

भिकियासैंण में महात्मा गांधी के जीवन यात्रा की जानकारी लेते लोग • जागरण

संस, जागरण • भिकियासैंण : डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन पर आधारित पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। मौके पर गांधी जी के जीवन के बारे में विस्तार से जानकारी देकर उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया गया।

महाविद्यालय में विज्ञान व इतिहास विभाग में अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के सहयोग से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के जीवन पर आधारित पोस्टर प्रदर्शनी लगाई गई। जिसमें गांधी जी के जीवन, विचार और कार्यों से लेकर आजादी के आंदोलन में उनके महत्वपूर्ण योगदान एवं उनसे जुड़े अन्य पहलुओं को प्रदर्शित किया गया। गांधी जी की उत्तराखंड यात्रा को भी प्रदर्शनी के माध्यम से दर्शाया गया। अजीम जी प्रेम जी फाउंडेशन के अभिजीत गंगोला, अभिषेक झा और जगमोहन चोपटा ने गांधी जी से जुड़े प्रसंगों को छात्र-छात्राओं के साथ साझा किए। प्रदर्शनी में महाविद्यालय स्टाफ, छात्र-छात्राओं एवं स्थानीय लोगों ने उत्सुकता के साथ प्रतिभाग किया और गांधी जी की जीवनी और उनके योगदान का जाना। कार्यक्रम का संचालन डा. साबिर हुसैन एवं डा. दीपा लोहनी ने किया। इस अवसर पर प्रभारी प्राचार्य प्राचार्य डा. दयाकृष्ण, डा. गौरव कुमार, डा. इला बिष्ट, डा. दिनेश कुमार, डा. सुभाष चंद्र, डा. राजीव कुमार, महेश चंद्र, पूरन जलाल सहित छात्र-छात्राएं व स्थानीय लोग मौजूद थे।

दैनिक शुभारम्भ न्यूज़

HOME उत्तराखण्ड देश/विदेश रोज़गार शिक्षा राजनीति

Subscribe Sign In

उत्तराखण्ड / Leave a Comment

डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में पुरातन छात्र परिषद की बैठक का हुआ आयोजन।

भिकियासैंण। डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना के दिशा-निर्देशन व पुरातन छात्र संरक्षण समिति के तत्वावधान में पुरातन छात्र परिषद की एक बैठक आयोजित की गई। बैठक में महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों में पुरातन छात्रों की सहभागिता के संबंध में चर्चा की गई।

महाविद्यालय में छात्रों की उपस्थिति, गणवेश, अनुशासन व अन्य मुद्दों पर पुरातन छात्रों से विचार विमर्श किया गया। पुरातन छात्रों ने महाविद्यालय में अध्यनरत छात्र-छात्राओं से वार्तालाप कर नियमित रुप से कक्षाओं में उपस्थित होने एवं अपने जीवन में अनुशासित रहकर लगनपूर्वक मेहनत कर उन्हें अपने लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। साथ ही छात्र-छात्राओं की समस्याओं को भी जाना। इसके अतिरिक्त पुरातन छात्रों ने महाविद्यालय की स्वच्छता हेतु अनेक सुझाव दिए। संचालन प्रभारी प्राचार्य एवं पुरातन छात्र संरक्षण समिति के संयोजक डॉ. दयाकृष्ण ने किया। इस अवसर पर पुरातन छात्र संरक्षण समिति के सदस्य डॉ. दीपा लोहनी, डॉ. गौरव कुमार, डॉ. राजीव कुमार, पूर्व छात्र धीरज, प्रवेश, भावेश, पंकज एवं महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

रिपोर्टर- एस. आर. चन्द्रा भिकियासैंण

उत्तराखण्ड / Leave a Comment

डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में एनएसएस इकाई के तत्वाधान में लोक अदालत विषय पर जागरुकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन।

भिकियासैंण। राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना के निर्देशानुसार एनएसएस इकाई के तत्वावधान में लोक अदालत विषय पर जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ. दयाकृष्ण की अध्यक्षता में एन.एस.एस कार्यक्रम अधिकारी डॉ. दीपा लोहनी द्वारा आयोजित किया गया।

इस अवसर पर कार्यक्रम की मुख्य वक्ता हेमा पांडे, पीएलवी जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अल्मोड़ा द्वारा लोक अदालत के विषय में जानकारी देकर लोक अदालत की कार्यप्रणाली के संबंध में छात्र-छात्राओं, महाविद्यालय स्टॉफ और स्थानीय लोगों को जागरुक किया गया। एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ. दीपा लोहनी ने लोक अदालत के उद्देश्यों और महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर महाविद्यालय स्टॉफ, छात्र-छात्राएं एवं स्थानीय लोग उपस्थित रहे।

रिपोर्टर- एस. आर. चन्द्रा भिकियासैंण

उत्तराखण्ड / Leave a Comment

डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस।

भिकियासैंण। डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में महिला उत्पीड़न निवारण समिति के तत्वाधान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। उक्त कार्यक्रम के अवसर पर महिला सशक्तिकरण संबंधी संवैधानिक प्रावधानों अधिकारों तथा योजनाओं पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में पीएलवी हेमा पांडे, जिला सेवा प्राधिकरण अल्मोड़ा मुख्य वक्ता के रुप में विद्यार्थियों को अपने व्याख्यान से संबोधित किया तथा महिला सशक्तिकरण संबंधित विभिन्न कानूनों, योजनाओं व प्रावधानों से विद्यार्थियों को अवगत कराया।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों को महिला सशक्तिकरण संबंधित, महिलाओं पर बनाई गई संक्षिप्त वीडियो फिल्म दिखाई गई तथा वीडियो फिल्म के माध्यम से उनको महिला सशक्तिकरण से संबंधित विभिन्न आयामों के बारे में जानकारी दी गई। कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना के मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभारी प्राचार्य डॉ. दयाकृष्ण के द्वारा की गई। कार्यक्रम का संचालन महिला उत्पीड़न निवारण समिति की संयोजक डॉ. इला बिष्ट के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राध्यापक, कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

रिपोर्टर- एस. आर. चन्द्रा भिकियासैंण

मीमांसा

“इकिगाई” हेक्टर गार्सिया और फ्रांसेस्क मिरालेस द्वारा रचित एक बेहद शानदार पुस्तक है। इकिगाई एक जापानी शब्द है जिसका अर्थ लोगों की लम्बी आयु के पीछे छिपे रहस्य से है। इकिगाई का समान्य अर्थ हमेशा व्यस्त रहने से मिलने वाला आनन्द है। यह पुस्तक जापान में ओकिनावा आइलैंड में पाये जाने वाले सबसे ज्यादा उम्र के लोगों के बारे में है जो अपनी लम्बी उम्र का कारण इकिगाई के हिसाब से अपना हर दिन जीना बताते है। यह पुस्तक जीवन के उद्देश्य को खोजने तथा खुशाहल, संतुष्ट जीवन जीने के बारे में है। इकिगाई एक पारम्परिक जापानी अवधारणा है जो लम्बी उम्र और एक खुशहाल जीवन जीने की कला के बारे में बतलाती है। इकिगाई का सार हमेशा व्यस्त, खुशी और आनन्द के साथ अपने जीवन को जीने की कला से है।

डा0 इला बिष्ट
सम्पादक
ई पत्रिका - गगास

महाविद्यालय परिवार

प्राचार्य

प्रो॰ (डॉ॰) शर्मिला सक्सेना

प्राध्यापक वर्ग

अर्थशास्त्र विभाग

डॉ॰ विश्वनाथ पाण्डेय

(असि॰ प्रोफेसर)

हिन्दी विभाग

डॉ॰ सुभाष चन्द्र आर्य

(असि॰ प्रोफेसर)

राजनीति विज्ञान विभाग

डॉ॰ दिनेश कुमार

(असि॰ प्रोफेसर)

इतिहास विभाग

डॉ॰ दीपा लोहनी

(असि॰ प्रोफेसर)

समाजशास्त्र विभाग

डॉ॰ इला बिष्ट

(असि॰ प्रोफेसर)

भूगोल विभाग

डॉ॰ पारितोष उप्रेती

(असि॰ प्रोफेसर)

अंग्रेजी विभाग

डॉ॰ कौशल कुमार

(असि॰ प्रोफेसर)

वाणिज्य विभाग

डॉ॰ गौरव कुमार

(असि॰ प्रोफेसर)

डॉ॰ राजीव कुमार

(असि॰ प्रोफेसर)

जन्तु विज्ञान विभाग

डॉ॰ दयाकृष्ण

(असि॰ प्रोफेसर)

रसायन विज्ञान विभाग

डॉ॰ साविर हुसैन

(असि॰ प्रोफेसर)

कार्यालय

श्री कैलाश चन्द्र जोशी
(प्रधान सहायक) (संबद्ध)

श्री गौरव कुमार
(कनिष्ठ लिपिक)

श्री प्रदीप कुमार (उपनल)
(कनिष्ठ लिपिक)

प्रयोगशाला सहायक

श्री बिरेन्द्र राम
(जन्तु विज्ञान)

श्री शेरसिंह
(भौतिक विज्ञान)

अनुसेवक

श्री पूरन जलाल (उपनल)
श्री श्याम सुन्दर (उपनल)
श्री सुरेश कुमार (उपनल)
श्री सतीश कुमार (उपनल)

Info Desk

College Website- https://gdcbhikiyasain.in/

College Fb ID- https://www.facebook.com/photo/?fbid=525965566878099&set=a.525965573544765

College Youtube - UCV7z6yOzKf2rhW4jz9qzBfA

SSJU Website- https://www.ssju.ac.in/

Routes to Roots- https://r2rdigital.routes2roots.com/

Skill Development Programme-
https://www.msde.gov.in/

Anti-Ragging-
https://www.antiragging.in/affidavit_affiliated_form.php

Anti Drug-
https://pledge.mygov.in/fightagainstdrugabuse/